संपूर्ण भारत के लिए एक प्रकाशन

दैनिक घटती घटना

RNI Reg.No.-CHHHIN/2004/15050
Postal Reg.No.-13/Surguja DN/2023-2025

Www.ghatatighatana.com

Ghatatighatana11@gmail.com

अम्बिकापुर,वर्ष 20,अंक -306 शनिवार ,07 सितम्बर 2024 , पृष्ठ - 8 मूल्य 2 रूपये

कलम बंद कलम बंद कलम बंद कलम बंद कलम बंद कलम बंद कलम बंद कलम बंद

सरगुजा कलेक्टर किसके दबाव मे कर रहे है काम

नियम विरूद्ध बुलडोजर कार्यवाही करवाने क्यों मजबूर हुये कलेक्टर बिलास भोसकर

अपील के अधिकार से वंचित कर कुछ घंटो में ही क्यों उजाड़ दिया आशियाना

पूछकर बताईये कलेक्टर सरगुजा क्या छापे ?

सरकार ने हक छीना... कलेक्टर ने अपील का अधिकार छीना...

इंकलाब होता रहेगा... इंसाफ तक... कलम बंद का 67 वां दिन

दो अनमोल रतन

एक है संजय,तो दूसरा प्रिंस

इस समय दो अनमोल रतन बने हुए हैं दोनों के ऊपर गंभीर आरोप होने के बावजूद जांच व कार्यवाही में विलंब कुछ ऐसा ही इशारा करता हैं...

संजय मरकाम,ओएसडी,स्वास्थ्य मंत्री

कौन सी खबर प्रकाशित करें...

छत्तीसगढ़ सरकार

प्रिंस जायसवाल, प्रभारी डीपीएम,सूरजपुर

आपको जो कमियां दिखाई जा रही हैं वह आपको पसंद नहीं आ रही हैं प्रशासनिक तंत्र में कितनी कमियां हैं यह शायद आपको दिख नहीं रहा और अखबार आपको दिखाना चाह रहा है वह देखना नहीं चाहते ऐसे में क्या प्रकाशित करें यह आप ही तय करें? अखबार जो आपको कमियां दिखा रहा है उस कमियों को आपको दूर करना था पर उन कमियों को दूर करने के बजाय आप अखबार से पत्रकार से संपादक से आपको दिक्कत हो रही फिर आप यह समझिए कि आपसे जनता को कितनी दिक्कतें हो रही होंगी?

कलमबंद से घटती-घटना के स्नेही पाठकों,विज्ञापनदाताओं एवं शुभचिंतकों को हो रही असुविधा के लिए खेद है...

संपादक :- अविनाश कुमार सिंह

कलेक्टर साहब...! आतंकवादी थे...हत्यारे थे...बलात्कारी थे...इनमें से क्या थे?...

कि बिना अपील का मौका दिए बुलडोजर कार्यवाही करना आपकी मजबूरी थी?

-भूपेन्द्र सिंह-

अंबिकापुर,06 सितम्बर 2024 (घटती-घटना)। देश में अपने कई बार यह सुना होगा कि खूंखार आतंकवादी या जघन्य हत्याकांड का हत्यारा या बलात्कारी के मामले में बुलडोजर की कार्यवाही एक प्रथा बन गई थी पर यदि ऐसी स्थिति ना हो और फिर भी बुलडोजर की कार्यवाही नियम विरुद्ध तरीके से कर दी जाए तो फिर सवाल तो बनता है कि आखिर ऐसी कौन सी परिस्थिति आ गई थी या कौन सा कानून व्यवस्था खराब हो रहा था कि किसी अखबार के दफ्तर व प्रतिष्ठान पर बुलडोजर की कार्यवाही करने की जल्दबाजी की गई? बिना अपील का मौका दिए कार्यवाही करने के लिए आप विवश थे? क्या अखबार के संपादक, पत्रकार आतंकवादी थे...हत्यारे थे...या बलात्कारी थे... या फिर किसी आतंकवादी को अपने कार्यालय में पनाह दे रखी थी कि प्रशासन के लिए बिना समय दिए आशियाने को उजाड़ना अत्यंत जरूरी था...ऐसी कौन सी मजबूरी थी या ऐसी कौन सी कानून व्यवस्था खराब हो रही थी कि कलेक्टर सरगुजा के लिए आनन-फानन कार्यवाही करानी पड़ी? आज वही कार्यवाही नासूर बन गई है और चीख-चीख कर हर दिन अखबार फिर भी सवाल पूछ रहा है...कि अब तो आप ही पूछकर बता दीजिए...कि क्या छापे सरगुजा कलेक्टर...और आपने अपील के अधिकार से वंचित क्यों रखा...?आखिर ईमानदार छवि वाले...तानाशाह कैसे बन गए?

तुगलकी फरमान के विरूद्ध कलमबंद अभियान का...67 वां दिन

?

कलम बंद...का 67 वां दिन

समाचार पत्र में छपे समाचार एवं लेखों पर सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है। हमारा ध्येय तथ्यों के आधार पर सटिक खबरें प्रकाशित करना है न कि किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाना। सभी विवादों का निपटारा अम्बिकापुर न्यायालय के अधीन होगा।

कलमबंद से घटती-घटना के स्नेही पाठकों,विज्ञापनदाताओं एवं शुभचिंतकों को हो रही असुविधा के लिए खेद है...

संपादक :- अविनाश कुमार सिंह

C M Y K

छत्तीसगढ़ जैसी बुलडोजर कार्यवाही शायद ही देखी होगी..

कार्यवाही किसी आतंकवादी, हत्यारे या बलात्कारी के विरुद्ध नहीं

अखबार के दफ्तर प्रतिष्ठान के विरुद्ध...

कसूर तो बस अखबार के संपादक व पत्रकार का इतना ही था कि वर्तमान सरकार की कमियों को दिखा रहा था

अखबार के दफ्तर पर तो कार्यवाही हो गई पर फर्जी दिव्यांग प्रमाण-पत्र व फर्जी डिग्री पर नौकरी करने वाले के विरुद्ध कार्यवाही से क्यों घबरा रही शासन?

अखबार तो खबर प्रकाशित कर सरकार को वह कमियां दिख रहा था जिसे दूर करके जनता की हितेषी सरकार बनी...पर क्या वह जनता की हितेषी नहीं बनना चाह रही?

अखबार के दफ्तर पर कार्यवाही करने से तो शासन नहीं घबराई पर फर्जी दिव्यांग प्रमाण-पत्र व फर्जी डिग्री पर नौकरी करने वाले संजय व प्रिंस पर कार्यवाही करने से घबराहट क्यों ?

जिस अखबार को लोग छोटा अखबार मानते हैं आखिर इस अखबार की खबर से बौखलाहट क्यों होती है?

सरगुजा कलेक्टर विलास भोसकर संदीपान ने प्रतिष्ठान व कार्यालय पर बुलडोजर किसके हुकूम पर चलवाया?

अखबार के कलम बंद करने से लेकर अखबार के कार्यालय व संपादक के प्रतिष्ठान के टूटने तक की कहानी अपनी जुबानी...

दैनिक घटती-घटना संस्थान पर बुलडोजर चलाकर क्या क्रूरतावादी होने का परिचय दिया सरकार ने?

ज्ञात हो कि छत्तीसगढ़ के सरगुजा संभाग के दैनिक घटती-घटना अखबार को आखिरकार कलम बंद क्यों करना पड़ा...?

यह सवाल सभी के जेहन में आ रहा होगा,तो हम आपको बताना चाहेंगे कि दैनिक घटती-घटना अखबार सदैव ही लोगों के लिए सच्ची खबर प्रकाशित करने का काम करता है, सरकार किसी की भी हो उन्हें कमियां दिखाने का काम करता रहा है,वर्तमान सरकार में कमियों को दिखाने का काम एक बार फिर दैनिक घटती-घटना ने शुरू किया जिसका परिणाम यह मिला की कार्यालय व प्रतिष्ठान को जमींदोज कर दिया। कलेक्टर सरगुजा को वैसे तो काफी ईमानदार छवि का माना जा रहा था जब वह सरगुजा पहुंचे थे कलेक्टर बनकर लेकिन जैसे ही उनका नाम प्रभारी डीपीएम प्रिंस जायसवाल से जुड़ा वैसे ही उनकी भी छवि अब पाक-साफ नहीं रह गई यह माना जा सकता है। एक फर्जी अहर्ता के आधार पर नौकरी करने के आरोपी के साथ उनकी घनिष्ठता उनकी छवि को नुकसान पहुंचा रही है। प्रभारी डीपीएम प्रिंस की तो आदत में ही छल और भ्रष्टाचार शुमार है वहीं जैसे ही उसकी शिकायत पर कलेक्टर सरगुजा एक अखबार के विरुद्ध सक्रिय हुए उसे नेस्तनाबूत करने के लिए यह तय हो गया की कलेक्टर सरगुजा खुद के विवेक से चलने की बजाए एक ऐसे व्यक्ति के इशारे पर काम कर रहे हैं जो फिलहाल जिस नौकरी में है उसके ही जांच की मांग हो रही है और उसके अहर्ता के भी फर्जी होने की बात कही जा रही है भ्रष्टाचार के आरोप तो जो हैं वह हैं ही।

क्या कसूर मात्र फर्जी दिव्यांग प्रमाण-पत्र व फर्जी डिग्री पर नौकरी करने वाले की खबर प्रकाशित करना था?

क्या सरकार सच देखना नहीं चाहती या फिर दिख रही कमियों को किसी के दिखाने पर उसे दूर नहीं करना चाहती? किसी अखबार के दफ्तर पर हुई कार्यवाही को लेकर तरह-तरह के सवाल हैं और सवाल हो भी तो क्यों ना हो? क्या वर्तमान सरकार भी फर्जी लोगों को ही संरक्षण देना चाहती है,वास्तविक दिव्यांग सरकार से मिलने वाले लाभ से वंचित हो रहे हैं पर वही फर्जी दिव्यांग प्रमाण-पत्र पर नौकरी पाकर वास्तविक दिव्यांगों के हक को मारा जा रहा,जिसे लेकर दैनिक घटती-घटना ने खबर प्रकाशित कर रहा था,जिसमें संजय मरकाम जो प्रशासनिक राज्य सेवा के अधिकारी हैं साथी वर्तमान में स्वास्थ्य मंत्री के ओएसडी हैं अब इनके ऊपर आरोप है कि उनकी दिव्यांग प्रमाण-पत्र ही फर्जी है जिसके आधार पर वह डिप्टी कलेक्टर बने हुए हैं वहीं दूसरी ओर स्वास्थ्य मंत्री के भतीजे कहकर घूमने वाले सूरजपुर के प्रभारी डीपीएम प्रिंस जायसवाल जिनकी डिग्री ही फर्जी है,अब इन दोनों के मामले में खबर प्रकाशित की जा रही थी जिसके विरुद्ध शासन को प्रशासन को संज्ञान लेकर जांच करके कार्यवाही करनी थी पर उनके विरुद्ध कार्यवाही करने में घबराहट हुई,पर वहीं उनकी कमियों को प्रकाशित करने वाले अखबार के दफ्तर व प्रतिष्ठा पर कार्यवाही बुलडोजर के द्वारा कर के अपने पाक साफ सरकार बताने में लगे हुए हैं। दोनों ही स्वास्थ्य मंत्री से जुड़े हुए हैं पर स्वास्थ्य मंत्री इन दोनों के मामले में साफ कह रहे हैं कि प्रभारी डीपीएम मेरा कोई भतीजा नहीं है और जांच के लिए बात कही गई है,वहीं उनके ओएसडी के डिग्री फर्जी है यह बात उन्हें पता नहीं थी पर अब पता है तो भी वह कार्यवाही नहीं कर पा रहे, आखिर यह दोनों व्यक्ति कितने प्रभावशील व्यक्ति हैं की स्वास्थ्य मंत्री भी उनके सामने लाचार हैं? पर वहीं इन सब खबरों को प्रकाशित करने वाला अखबार ही कसूरवार हो गया?

-भूपेन्द्र सिंह-
अंबिकापुर,06 सितंबर 2024 (घटती-घटना)।

पूरे देश में अपने बुलडोजर कार्यवाही के कई मामले देखे व सुने होंगे लगभग सभी मामले ऐसे प्रकरणों में देखने व सुनने को मिले होंगे जो मामले आतंकवादी या हत्यारे या फिर बलात्कारी व भू माफियों से जुड़े होते हैं,जो काफी क्रूरता पूर्वक किसी अपराध को अंजाम देते हैं इसके प्रति जनता में काफी विरोध होता है और सरकार से न्याय की उम्मीद होती है, ऐसी कार्यवाहियों पर जनता भी सरकार की पीठ थपथपाने का प्रयास करती है, पर इस समय देश के एक छोटे से राज्य छत्तीसगढ़ की एक बुलडोजर कार्यवाही की बात हो रही है जो अपने आप में एक अजीबो-गरीब कार्यवाही कहीं जा सकती है, यह कार्यवाही कहे तो लोकतंत्र के विरुद्ध है कहे तो लोकतंत्र के चौथे स्तंभ को दबाने के लिए है या कहे तो पावर वाले व्यक्तियों के लिए है जो सच प्रशासन बर्दाश्त नहीं कर सकते? यह कार्यवाही आतंकवादी हत्यारे व बलात्कारियों के विरुद्ध नहीं हुई यह कार्यवाही हुई तो लोकतंत्र के चौथे स्तंभ व संविधान के अनुच्छेद 19 के तहत ईमानदारी से खबर प्रकाशित करने वाले अखबार के दफ्तर के विरुद्ध हुई, उसके प्रतिष्ठा के विरुद्ध हुई, जिसमें बिना समय दिए वह अपील के अधिकारों से वंचित करके बुलडोजर कार्यवाही उसे तर्ज पर की गई जिस तर्ज पर आतंकवादियों बलात्कारियों व हथियारों के घरों पर की जाती है। यही वजह है कि छत्तीसगढ़ में भाजपा सरकार आने के बाद बुलडोजर की पहली कार्यवाही काफी सुर्खियों में है और कहे तो काफी विवादों में भी है।

बुलडोजर कार्यवाही से सरकार के चेहरे से हिंदूवादी मुखौटा उतर गया

जिस तरह दैनिक घटती-घटना समाचार-पत्र के विरुद्ध द्वेषवश कार्यवाही सरकार ने की वह कार्यवाही कोई हिंदूवादी सरकार की कार्यवाही नहीं कही जा सकती...? क्योंकि कार्यवाही पीठ पर वार जैसी थी वहीं कार्यवाही तब की गई जब समाचार-पत्र के संपादक गमगीन अवस्था में थे यदि कहा जाए सूतक काल में थे। वैसे कार्यवाही के संदर्भ में यह भी देखने को मिला की कार्यवाही के लिए सरकार ने अपनी पूरी ताकत लगा दी,यहां तक कि कैबिनेट की बैठक भी उन्हें करनी पड़ी जो यह साबित करने काफी है की सरकार प्रदेश की हिंदूवादी सरकार जो भ्रष्टाचार के विरुद्ध खुद को एक बेहतर सरकार बतलाती है वह भ्रष्टाचार और भ्रष्टाचारियों को बचाने के लिए निम्न स्तरीय निर्णय लेने भी मजबूर हुई क्योंकि भ्रष्टाचारी एक तरफ एक मंत्री का भतीजा भी है और वहीं उसी मंत्री का एक ओएसडी भी और दोनों ही की नौकरी भी फर्जी है डिग्री फर्जी है एक की नौकरी फर्जी दिव्यांग प्रमाण-पत्र के आधार पर लगी है।

क्या भ्रष्टाचार करने वाले अधिकारियों-कर्मचारियों के लिए ही सरकार केवल सही व्यवहार रखती है..?

सरकार की नजर में हमारा कसूर खबरों के मध्यम से कमी दिखाना था,क्या सही में यही वजह थी इसलिए प्रतिष्ठान को नेस्तनाबूत करने का निर्णय लिया गया,क्योंकि वह सरकार के भ्रष्टाचार को उजागर करने वहीं सरकार के मंत्रियों के इर्द-गिर्द रहने वाले भ्रष्ट एवं ऐसे अधिकारियों के खिलाफ वह अभियान चला रहा होता है,जिनकी या तो डिग्री फर्जी है या फिर वह फर्जी दिव्यांग प्रमाण-पत्र के आधार पर नौकरी कर रहे हैं,यदि कहा जाए की केवल गलत लोगों साथ ही भ्रष्टाचार के रास्ते नौकरी में आए भ्रष्टाचार करने वाले अधिकारियों कर्मचारियों के लिए ही सरकार केवल सही व्यवहार रखती है..? ईमानदार और भ्रष्टाचार विरुद्ध सोच रखने वाले के खिलाफ ही सरकार क्या षड्यंत्र कर रही है...यह भी एक बड़ा सवाल है।

बुलडोजर कार्यवाही हुई भी तो उसके शिकायत पर...जिसकी खबर छप रही थी...शिकायतकर्ता भी कोरिया से ढूंढ लाए...

दैनिक घटती-घटना अखबार के कार्यालय व प्रतिष्ठा पर कार्यवाही करने के लिए सरगुजा जिला प्रशासन ने कैसे शिकायतकर्ता को ढूंढ कर लाया...वह भी जिसके विरुद्ध लगातार अनियमिताओं खबर छप रही थी...सरगुजा जिले में नहीं मिला...शिकायतकर्ता तो कोरिया से ढूंढ निकाला गया शिकायतकर्ता...ताकि अखबार को आर्थिक नुकसान पहुंचाया जा सके...और खबर को लेकर दबाव बनाया जा सके। यहां तक कि कलम बंद अभियान को भी बंद किया जा सके।

संविधान विरोधी हुई कार्यवाही पर एक नजर... जिसका न्यायालय में जवाब तो सबको देना होगा

- प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री जो दैनिक घटती-घटना की खबरों की ही देन है उनसे जुड़ी कमियों को अखबार ने जब दिखाना शुरू किया तो उन्हें यह बात रास नहीं आई।
- स्वास्थ्य मंत्री के विभाग में जो हो रहा था उससे उनकी छवि खराब हो रही थी जिसे बताने का काम दैनिक घटती-घटना ने किया तो यह नहीं पता था कि उन्हें बताना कभी महंगा पड़ेगा।
- कमियां दूर करने के बजाय दैनिक घटती-घटना को दबाने के लिए उन्हें आर्थिक नुकसान पहुंचाने के लिए जून 2024 में शासकीय विज्ञापन पर रोक लगाया गया।
- विज्ञापन रोक लोकतंत्र के चौथे स्तंभ पर दबाब बनाने के फैसले के विरोध में दैनिक घटती-घटना ने 1 जुलाई 2024 से कलम बंद अभियान की शुरुआत की ताकि लोकतंत्र का चौथा स्तंभ हमेशा ही स्वतंत्रता के साथ काम कर सके।
- दैनिक घटती-घटना अखबार इस अभियान को सिर्फ अपने लिए शुरू नहीं किया लोकतंत्र के चौथे स्तंभ को बचाने के लिए इस अभियान को शुरू किया...।
- 3 जुलाई 2024 को टीएल मीटिंग में कलेक्टर साहब ने अपने घनिष्ठा प्रिंस जायसवाल के आवेदन को मंगाया और जांच के लिए आदेशित किया।
- 5 जुलाई 2024 को नमनाकला आरआई ने जांच प्रतिवेदन जांच करके सौंप दिया।
- 10 जुलाई 2024 को आबंटन/व्यवस्थापन समिति के द्वारा हमारे आबंटन/व्यवस्थापन प्रकरण को अपात्र घोषित कर दिया गया।
- 13 जुलाई 2024 को मंत्री जी के प्रतिनिधि मंडल संपादक के कार्यालय पहुंचे बातचीत हुई और चलते बने।
- 19 जुलाई 2024 को कैबिनेट की बैठक रखी गई और पूर्व सरकार के फ्री होल्ड व 152 प्रतिशत वाली योजना को निरस्त कर दिया गया,जिस कारण पुरे प्रदेश के लोगो को नुकसान हुआ जिसका खामियजा नगरी निकाय चुनाव में वर्तमान सरकार भुगतना पड़ सकता है।
- अखबार के कार्यालय को और संपादक के प्रतिष्ठान को तोड़ने के लिए 19 जुलाई 2024 को कैबिनेट की बैठक रखी गई।
- 23 जुलाई 2024 को पूर्व सरकार के 152 परसेंट व फ्री होल्ड योजना को निरस्त कर दिया गया...यह आदेश लोगों की जानकारी में 26 जुलाई 2024 को आया और 26 जुलाई को ही बेदखली का नोटिस 23 जुलाई 2024 की तिथि पर दिया गया।
- अखबार के संपादक को बेदखली का नोटिस पितृ शोक के दौरान मिला 26 जुलाई 2024 को शाम 6:45 बजे के बाद मिला और 27 जुलाई 2024 का समय दिया गया बेदखली का।
- पितृ शोक में रहने के बावजूद संपादक ने तत्काल ही 26 जुलाई 2024 को संबंधित अधिकारी को बेदखली में खाली करने के लिए समय मांगा गया पर समय न देकर 28 जुलाई 2024 को सुबह 5:00 बजे प्रशासन कई बुलडोजर व सुरक्षा के साथ पहुंच गया।
- कार्यवाही की एक दिन पहले 27 जुलाई 2024 को रात 10:30 बजे स्वास्थ्य मंत्री के प्रतिनिधिमंडल जिसमें उनके ओएसडी संजय मरकाम सहित चार अन्य लोग संपादक के घर बैठे रहे और मामले पर बात करते रहे।
- स्वास्थ्य मंत्री का प्रतिनिधिमंडल 4:00 तक संपादक के घर बैठ रहा और 5:00 बजे कार्रवाही करने पूरा प्रशासनिक अमला पहुंच गया।
- दैनिक घटती-घटना के कलम बंद अभियान को संज्ञान में लेने के बजाय उस अभियान को बंद करने के लिए 28 जुलाई 2024 अखबार के कार्यालय व संपादक के प्रतिष्ठान पर बुलडोजर की कार्यवाही की गई।
- दैनिक घटती-घटना के कलमबंद अभियान के तहत प्रदेश के मुख्यमंत्री स्वास्थ्य मंत्री और संयुक्त संचालनालय जनसंपर्क के उपसंचालक मयंक श्रीवास्तव से शासकीय विज्ञापन बंद करने को लेकर सवाल पूछा कि आखिर क्या छापे जिससे आपको बुरा ना लगे?
- यह बात भी सरकार को नागवार गुजरी और सरकार ने और बड़ा कदम उठाया ताकि लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कुचला जा सके।
- कलमबंद अभियान के तहत 28 दिनों से प्रदेश के जिम्मेदार व प्रदेश की बेहतरी के लिए जिनके हाथों में कमान है उनसे सवाल किया गया पर वह सवाल को भी बर्दाश्त नहीं कर पाए और 28 में दिन दैनिक घटती घटना के संस्थान पर बुलडोजर चलवा दिया।
- बुलडोजर चलवाना भले ही लोकतंत्र को कुचलने के लिए आसान लगा हो पर बुलडोजर चलने की आवाज भी पूरे देश में गूंज गई।
- पूरे देश में छत्तीसगढ़ सरकार की तानाशाही दिख गई,लोकतंत्र की हत्या करने का प्रयास दिख गया, पर नहीं दिख सकी तो सरकार की संवेदनशीलता सरकार ने यह बता दिया कि उनके अंदर संवेदना बिल्कुल नहीं है।
- जिस समय कार्यवाही की गई वह समय संपादक के घर पर शोक का था पर शोक के समय में सरकार ने कार्यवाही करके हिंदूवादी पार्टी होने के दावे को भी झुठला दिया।
- अखबार जो कमियों को दिखा रहा था वह कमी वाकई में सरकार की छवि को खराब कर रही थी सरकार अखबार की खबरों पर संज्ञान लेकर अपनी छवि को बेहतर कर सकती थी।
- उनके मंत्री अपनी छवि को बेहतर कर सकते थे पर अपनी छवि बेहतर करने के बजाय अपनी छवि को और खराब करने का सरकार का प्रयास सरकार के लिए ही गले की फांस बन गई।

खुला पत्र

देश के माननीय प्रधानमंत्री से भी सवाल...क्या भ्रष्टाचार के विरुद्ध छत्तीसगढ़ की प्रदेश सरकार के खिलाफ समाचार लिखना है अपराध?

अम्बिकापुर,06 सितम्बर 2024 (घटती-घटना)। माननीय मुख्यमंत्री से भी सवाल है...छत्तीसगढ़ में आपकी सरकार है...केंद्र में भी आपकी पार्टी की सरकार है...पर छत्तीसगढ़ में लोकतंत्र के चौथे स्तंभ को कमियां दिखाने से रोकने का भी प्रयास हो रहा है...यह प्रयास कहीं ना कहीं स्वस्थ लोकतंत्र को कमजोर करने का प्रयास है...जहां पर भाजपा सरकार से लोगों को बेहतर करने की उम्मीद होती है तो वहीं पर छत्तीसगढ़ में नवनिर्वाचित मंत्री,विधायक बे-लगाम हो चुके हैं...उन्हें जो जिम्मेदारी मिली है उसे जिम्मेदारी को निभाने में असमर्थ दिख रहे हैं...उनकी कमियों को बताना उन्हें रास नहीं आ रहा इसलिए वह पत्रकार,संपादक का कलम बंद करने का प्रयास कर रहे हैं अब इस पर आप ही संज्ञान ले...और बताएं की संपादक व पत्रकार कौन सी खबर प्रकाशित करें?

क्या छापें माननीय प्रधानमंत्री जी?

कलम बंद...का 67 वां दिन

?

कलम बंद...का 67 वां दिन

कलमबंद से घटती-घटना के स्नेही पाठकों,विज्ञापनदाताओं एवं शुभचिंतकों को हो रही असुविधा के लिए खेद है...

संपादक :- अविनाश कुमार सिंह

खुला पत्र

भारत में सच्चे पत्रकार को राजनीतिक पार्टियों से खतरा क्यों रहता है?

अम्बिकापुर,06 सितम्बर 2024(घटती-घटना)। भारत अपने पत्रकारों को निडर होकर काम करने का स्वतंत्र तरीका प्रदान करने में बहुत पीछे है...इन दिनों...कुछ को छोड़कर...हर दूसरा पत्रकार वही खबर दे रहा है जो सरकार की प्रशंसा करती है...नए चैनल लोगों को सरकार द्वारा की गई गलती से विचलित करने के लिए विभिन्न विषयों पर अनावश्यक बहस दिखाएंगे...इसके कारण,अधिक महत्वपूर्ण मुद्दे हैं जो किसी का ध्यान नहीं जाता हैं...दूसरा कारण यह है कि पत्रकार अपने सिद्धांतों और मूल्यों को खो रहे हैं क्योंकि आज स्थिति ऐसी है कि स्थापना के खिलाफ विषयों पर बोलने या लिखने वाले पत्रकारों को धमकी देना,गाली देना और मारना कई अन्य देशों की तरह भारत में भी एक वास्तविकता बन गई है...देश और दुनिया को डरा दिया है...वहीं,पत्रकारों पर लगातार हो रहे हमलों की घटनाओं ने एक बार फिर उन्हें सुर्खियों में ला दिया है...जो पत्रकार देश और उसके आम नागरिकों के लिए लिखे वे मरे या प्रताड़ित हुए सरकारी तंत्रों के द्वारा...!

अब आप ही पूछकर बताईए कलेक्टर सरगुजा विलास भोसकर साहब...कि क्या छापें?

कलम बंद...का 67 वां दिन

?

कलम बंद...का 67 वां दिन

कलमबंद से घटती-घटना के स्नेही पाठकों,विज्ञापनदाताओं एवं शुभचिंतकों को हो रही असुविधा के लिए खेद है...

संपादक :- अविनाश कुमार सिंह

खुला पत्र

क्या भ्रष्टाचार का मामला वहीं होगा दर्ज जहां होगी भाजपा से इतर दल की सरकार ?

» भ्रष्टाचार की खबरों से दिक्कत...» कमी दिखाओ तो दिक्कत...
» जनता की परेशानियों को दिखाओ तो दिक्कत...

अम्बिकापुर ,06 सितम्बर 2024(घटती-घटना)। आखिर लोकतंत्र का चौथा स्तंभ करें तो क्या करें ? सरकारी तंत्र भ्रष्टाचार की ओर बढ़ रहे भ्रष्टाचार को उजागर करने पत्रकार दौड़ रहा पर पत्रकार की दौड़ के पीछे निर्वाचित जनप्रतिनिधि उसकी दौड़ की गति को कम करने का प्रयास कर रहे हैं,भ्रष्टाचार बढ़ता रहे पर पत्रकार ना दिखाएं क्या यही चाहता है जनप्रतिनिधि या फिर सरकारी तंत्र...

राष्ट्रपति महोदया,आखिर छापें क्या ?

?

कलम बंद...का 67 वां दिन

कलम बंद...का 67 वां दिन

कलमबंद से घटती-घटना के स्नेही पाठकों,विज्ञापनदाताओं एवं शुभचिंतकों को हो रही असुविधा के लिए खेद है...

संपादक :- अविनाश कुमार सिंह

विनेश फोगाट और बजरंग पूनिया ने छोड़ी अपनी नौकरी

» साक्षी मलिक ने बताई पूरी सच्चाई

नई दिल्ली,06 सितम्बर 2024।
पहलवान विनेश फोगाट के राजनीति में अपनी जिंदगी की नई पारी की शुरुआत करने जा रही हैं। वहीं इस बीच बड़ी जानकारी सामने आ रही है कि भारतीय रेसलर विनेश फोगाट ने भारतीय रेलवे की नौकरी से इस्तीफा दे दिया है। सोसल मीडिया पोस्ट कर विनेश फोगानट ने खुद इसकी जानकारी दी है। विनेश फोगाट ने एक्स पर लेटर का फोटो शेयर किया है। इस फोटो कैप्शन में उन्होंने लिखा कि भारतीय रेलवे की सेवा मेरे जीवन का एक यादगार और गौरवपूर्ण समय रहा है। जीवन के इस मोड़ पर मैंने स्वंय को रेलवे सेवा से अलग करने का निर्णय लेति हुए अपना त्यागपत्र भारतीय रेलवे के समक्ष अधिकारियों को सौंप दिया है। राष्ट्र की सेवा में रेलवे द्वारा मुझे दिए गए इस अवसर के लिए मैं भारतीय रेलवे की सदैव आभारी रहूंगी।
पहलवान साक्षी मलिक ने बजरंग और विनेश के मामले पर अपनी प्रतिक्रिया भी दी है। उन्होंने कहा कि वे दोनों कांग्रेस पार्टी में शामिल होंगे। जिस कारण दोनों ने इस्तीफा दे रहे हैं। ये उनका निजी फैसला है। हमारे आंदोलन को गलत रूप नहीं दिया जाना चाहिए। महिलाओं के लिए मेरा आंदोलन आज भी है और मैंने हमेशा कुश्ती की भलाई के लिए सोचा है।

19 साल के बल्लेबाज ने रचा इतिहास

सचिन तेंदुलकर का 33 साल का पुराना रिकॉर्ड तोड़ा

नई दिल्ली,06 सितम्बर 2024।
दलीप ट्रॉफी के पहले मैच में इंडिया-ए और इंडिया-बी के बीच मुकाबला खेला गया जिसमें पहले दिन सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल, ऋषभ पंत, सरफराज खान और वाशिंगटन सुंदर जैसे भारतीय क्रिकेट टीम के सितारों ने हथियार डाल दिए तो 19 साल के बल्लेबाज ने रन बनाने का बेड़ा उठाया और एक छोर पर पैर जमाते हुए पहले ही दिन शानदार शतक ठोकने का बड़ा कारनमा कर दिखाया। ये बल्लेबाज और कोई नहीं सरफराज खान के छोटे भाई मुशीर खान है जिसने दलीप ट्रॉफी में डेब्यू करते हुए शतक जड़ने का बड़ा कारनामा किया।

दलीप ट्रॉफी डेब्यू में रचा कीर्तिमान

पहले दिन का खेल खत्म होने पर मुशीर खान 227 गेंद में नाबाद 105 रन बनाकर लौटे और उनकी टीम का स्कोर 7 विकेट पर 202 रन था। दूसरे दिन शुरू होने पर मुशीर ने एक बार फिर से मोर्चा संभाला और

नवदीप सैनी के साथ मिलकर 8वें विकेट के लिए 204 रनों की कमाल की साझेदारी कर डाली। इस बीच मुशीर ने भी अपना स्कोर 150 के पार पहुंचा दिया। सरफराज का छोटा भाई डेब्यू मैच में दोहरा शतक लगाने की कगार पर खड़ा था कि तभी कुलदीप यादव ने उन्हें आउट कर दिया। इस तरह मुशीर की इस ऐतिहासिक पारी का अंत हो गया।

सचिन तेंदुलकर का रिकॉर्ड ध्वस्त

मुशीर भले ही दलीप ट्रॉफी के अपने डेब्यू मैच दोहरा शतक नहीं जड़ सके लेकिन उन्होंने 181 रनों की पारी की बदौलत सचिन तेंदुलकर का 33 साल पुराना रिकॉर्ड तोड़ दिया। मुशीर ने 373 गेंदों का सामना करते हुए 16 चौके और 5 छक्के अपनी पारी में लगाए और दलीप ट्रॉफी के डेब्यू मैच में तीसरा सबसे बड़ा स्कोर बनाने वाले टीनएजर (20 साल से कम उम्र) खिलाड़ी बन गए। इससे पहले ये रिकॉर्ड सचिन तेंदुलकर के नाम था, जिन्होंने जनवरी 1991 में अपने दलीप ट्रॉफी डेब्यू मैच में 159 रनों की पारी खेली थी। अब मुशीर ने सचिन तेंदुलकर को चौथे पायदान पर धकेल दिया है।दलीप ट्रॉफी डेब्यू मैच में सबसे बड़ी पारी खेलने वाले टीनएजर का रिकॉर्ड बाबा अपराजित के नाम है। बाबा ने 212 रन बनाए थे।

क्रिस्टियानो रोनाल्डो ने बनाया महारिकॉर्ड

» 900 गोल करने वाले पहले फुटबॉलर बनें

पुर्तगाल,06 सितम्बर 2024।
पुर्तगाल के स्ट्राइकर क्रिस्टियानो रोनाल्डो ने इतिहास रचा है। वो अधिकारिक मैचों में 900 गोल करने वाले पहले मेल फुटबॉलर बने हैं। उन्होंने यूईएफए नेशन लीग में में क्रोएशिया के खिलाफ गोल दागकर ये उपलब्धि हासिल की। रोनाल्डो ने नूनो मेंडेस के क्रॉस पर 6 गज की दूरी से वॉली के साथ ऐतिहासिक गोल किया और पुर्गाल को 34वें मिनट में 2-0 से आगे कर दिया। पुर्तगाल ने ये मुकाबला 2-1 से जीता। रोनाल्डो ने 900वां गोल करने के बाद कहा कि, ये बहुत मायने रखता है। ये एक ऐसा मील का पत्थर था जिसे मैं लंबे समय से हासिल करना चाहता था। मुझे पता था कि मैं इस नंबर तक पहुंच जाउंगा, क्योंकि जैसे-जैसे मैं खेलता रहूंगा, ये स्वाभाविक रूप से होता जाएगा। ये किसी भी अन्य मील के पत्थर की तरह लगता है। लेकिन केवल मैं और मेरे आस-पास के लोग जानते हैं कि हर दिन काम करना, शारीरिक और मनोवैज्ञानिक रूप से फिट रहना और 900 गोल करना कितना मुश्कि है।

रोनाल्डो ने मेसी को पछाड़ा

पांच बार बैलन डी ओर जीतने वाले रोनाल्डो ने लियोनेल मेसी को 58 गोल से पछाड़ा है। मेसी के मौजूदा समय में 842 गोल हैं। ब्राजील के दिग्गज पेले 765 गोल के साथ सूची में तीसरे नंबर पर हैं।

भारतीय पैरा पावरलिफ्टर अशोक छठे स्थान पर रहे

नई दिल्ली,06 सितम्बर 2024। भारत के पावरलिफ्टर अशोक उम्मीदों पर खरा नहीं उतर सके और यहां पैरालंपिक में पुरुषों की 65 किग्रा पैरा पावरलिफ्टिंग के फाइनल में छठे स्थान पर रहे। अशोक ने पहले प्रयास में 196 किग्रा का वजन उठाया।
इसके बाद 199 किग्रा और 206 किग्रा का भार उठाया। लेकिन यह पोडियम पर पहुंचाने के के लिए काफी नहीं था और आखिरकार वह आठ प्रतियोगियों में से छठे स्थान पर रहे।
चीन के यी जू ने प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीता जबकि ब्रिटेन के मार्क स्वान ने रजत पदक जीता। कांस्य पदक अल्जीरिया के होसीन बेटिर के नाम रहा। पैरा पावरलिफ्टिंग एक बेंच प्रेस प्रतियोगिता है जिसमें ऊपरी शरीर की ताकत की परीक्षा होती है।

विक्रम राठौर बना न्यूज़ीलैंड टीम का कोच

» टीम इंडिया को जिता चुके हैं वर्ल्ड कप

नई दिल्ली,06 सितम्बर 2024।
भारतीय टीम के पूर्व बल्लेबाजी कोच विक्रम राठौड़ अब न्यूजीलैंड टीम को कोचिंग देंगे। न्यूजीलैंड क्रिकेट बोर्ड ने टीम के आगामी सीजन को देखते हुए ये फैसला किया है। कीवी टीम को 9 सितंबर से ग्रेटर नोएडा में अफगानिस्तान के खिलाफ टेस्ट मैच खेलना है। इसके बाद वह श्रीलंका और भारत के खिलाफ भी रेड बॉल क्रिकेट सीरीज खेलेगी।एशिया में टेस्ट मैचों के लिए न्यूजीलैंड ने विक्रम राठौड़ को अपने साथ जोड़ा है। विक्रम राठौड़ राहुल द्रविड़ के कोचिंग स्टाफ का हिस्सा थे। वह केवल अफगानिस्तान टेस्ट के लिए टीम के साथ होंगे।

राठौड़ के अलावा श्रीलंकाई दिग्गज रंगना हेराथ भी कीवी टीम से जुड़े हैं। वह श्रीलंका के खिलाफ दो मैचों की टेस्ट सीरीज के लिए न्यूजीलैंड के साथ होंगे। पहले ये जगह सकलेन मुश्ताक को ऑफर की गई थी। हालांकि, पीसीबी से जुड़ने के कारण उन्होंने पीछे हटने का फैसला किया।
वहीं न्यूजीलैंड के कोच गैरी स्टीड दोनों के टीम के साथ जुड़ने से काफी खुल हैं। उन्होंने कहा कि, हम विक्रम और रंगना के जुड़ने से काफी उत्साहित हैं। दोनों का अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में बड़ा कद है। मैं जानता हूं कि मेरे खिलाड़ी भी उनसे सीखने के लिए उत्सुक हैं।

अहम टेस्ट सीरीज से पहले टीम इंडिया को मिली बड़ी चेतावनी

इस टीम के कप्तान ने रोहित शर्मा को दिखाई आंखें

नई दिल्ली,06 सितम्बर 2024।
भारत को 19 सितंबर से 2 मैचों की टेस्ट सीरीज में बांग्लादेश की मेजबानी करनी हैं। वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप यानी डब्ल्यूटीसी के नजरिए से ये सीरीज भारत के लिए काफी अहम हैं जिसमें उसे बांग्लादेश से कड़ी चुनौती मिल सकती है। दरअसल, बांग्लादेश टीम के हौसले इस समय काफी बुलंद हैं। इसके पीछे की वजह है बांग्लादेश को पाकिस्तान में मिली बड़ी जीत। हाल ही में बांग्लादेश ने 2 मैचों की टेस्ट सीरीज में पाकिस्तान का उसी के घर में सूपड़ा साफ कर इतिहास रचा। इस जीत से बांग्लादेश टीम का आत्मविश्वास सातवें आसमान पर है और यही वजह है कि टीम के कप्तान ने भारत के खिलाफ सीरीज से पहले ऐसा बड़ा बयान दिया है जिसे टीम इंडिया के लिए एक बड़ी चेतावनी माना जा रहा है।

4 शहर,25 मैच,लीजेंड्स लीग के शेड्यूल का ऐलान

खूबसूरत वादियों में होगा फाइनल

नई दिल्ली,06 सितम्बर 2024।
लीजेंड्स लीग क्रिकेट टूर्नामेंट की एक और सीजन के साथ वापसी होने जा रही है। इस लीग का 20 सितंबर से आगाज होगा जिसके पहले मैच में हरभजन सिंह की टीम मणिपाल टाइगर्स और इरफान पठान की टीम कोणार्क सूर्यास ओडिशा (जिसे पहले भीलवाड़ा किंग्स के नाम से जाना जाता था) के बीच भिड़ंत होगी। इस लीग में 6 टीमों के बीच कुल 25 मैच खेले जाएंगे और फिर फाइनल में पहुंचने वाली दो टीमें 16 अक्टूबर को खिताबी मुकाबला खेलेंगी। 200 से अधिक खिलाड़ियों वाले इस फ्रैंचाइजी लीग का आयोजन चार शहरों- जोधपुर, सूरत, जम्मू में किया जाएगा और फिर फाइनल मुकाबला श्रीनगर में खेला जाएगा। इस तरह कश्मीर में 40 साल के लंबे अंतराल के बाद क्रिकेट की वापसी होगी।
लीजेंड्स लीग क्रिकेट 20 सितंबर को जोधपुर के बरकतुल्लाह खान स्टेडियम में शुरू होगा, जो 27 सितंबर को सूरत के लालभाई कॉन्ट्रैक्टर स्टेडियम में खेला जाएगा। तीसरा चरण 3 अक्टूबर से जम्मू के मौलाना आज़ाद स्टेडियम में खेला जाएगा, जहां 40 साल बाद अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट की वापसी होने जा रही है। एलएलसी का अंतिम चरण 9 अक्टूबर से 16 अक्टूबर तक श्रीनगर के बख्शी स्टेडियम में खेला जाएगा, जहां फैंस क्रिकेट एक्शन को लाइव देखने के लिए करीब

आधी सदी से बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं।

कुल 25 मैचों में 6 टीमों के बीच भिड़ंत

लीग के कुल 25 मैचों में से जोधपुर का बरकतुल्लाह खान स्टेडियम 6 मैचों की मेजबानी करेगा। सूरत के लालभाई कॉन्ट्रैक्ट स्टेडियम को 27 सितंबर 2024 से 6 मैचों की मेजबानी मिली है। वहीं, जम्मू के मौलाना आजाद स्टेडियम में 3 अक्टूबर 2024 से 6 मैच खेले जाएंगे। श्रीनगर के बख्शी स्टेडियम में 9 अक्टूबर से 16 अक्टूबर 2024 तक फाइनल सहित सात मैचों का आयोजन होगा।भारत में आयोजित एलएलसी के पिछले संस्करण में हरभजन सिंह, सुरेश रैना, मोहम्मद कैफ, आरोन फिंच, मार्टिन गुप्टिल, गौतम गंभीर, क्रिस गेल, हाशिम अमला, रॉस टेलर जैसे कई दिग्गज क्रिकेटरों ने अपना जलवा बिखेरा था। इस सीजन में भारतीय लीजेंड्स शिखर धवन, दिनेश कार्तिक, अंबाती रायडू, धवल कुलकर्णी और केदार जाधव लीजेंड्स लीग क्रिकेट में डेब्यू करने के लिए तैयार हैं।

न्यायालय तहसीलदार अम्बिकापुर के न्यायालय में मामला क्रमांक 202408020700010

विषयः-अ-27 मामले की श्रेणीः- राजस्व
सन्:-2023-2024
अम्बिकापुर प.ह.न. 00015 (46/6(0.1340हे0))
पक्षकारों का विवरण
आवेदक पक्षकार-सुरेश कुमार प्रजापति, राजेश कुमार प्रजापति, दिनेश कुमार प्रजापति, महेश प्रजापति
अनावेदक पक्षकार-सुरेश कुमार प्रजापति, राजेश कुमार प्रजापति, दिनेश कुमार प्रजापति, महेश प्रजापति

-:: ईश्तहार ::-

आवेदक राजेश कुमार प्रजापति, आ0 स्व0 नन्द किशोर प्रजापति, निवासी रिंग रोड, केदारपुर, अम्बिकापुर, तहसील अम्बिकापुर, जिला सरगुजा छ0ग0 के द्वारा ग्राम अम्बिकापुर स्थित खसरा नंबर 46/6 रकबा 0.134 हे0 भूमि को उभयपक्ष के मध्य में 1/4 अंश में बंटवारा किए जाने हेतु आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया है।
उक्त संबंध में जिस किसी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो पेशी दिनांक 09.09.2024 के पूर्व न्यायालय में स्वयं अथवा अपने अभिभाषक के माध्यम से उपस्थित होकर दावा आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। समय सीमा के बाद प्राप्त दावा आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जायेगा।
यह ईश्तहार मेरे हस्ताक्षर एवं पदमुद्रा से आज दिनांक 01/08/2024 को जारी किया जाता है।

सील

उमेश्वर सिंह बैज
तहसीलदार
तहसील अम्बिकापुर, सरगुजा (छ.ग.)

राकेश रोशन के डायरेक्शन में बनी इन फिल्मों का नहीं कोई तोड़

हिंदी सिनेमा के दिग्गज डायरेक्टर, एक्टर, निर्माता और लेखक राकेश रोशन अपना 75 वां जन्मदिन मनाए । राकेश रोशन एक्टिंग ही नहीं अपने डायरेक्शन में बनी कई फिल्मों से भी फैंस का दिल जीता चुके हैं। उन्होंने अपने निर्देशन की कला से सभी को अपना मुरीद बना चुके हैं। मशहूर डायरेक्टर राकेश रोशन ने बतौर एक्टर करियर की शुरुआत की थी, लेकिन बाद में डायरेक्टर बनकर फिल्म इंडस्ट्री में एक खास पहचान बनाई है। राकेश रोशन की कोई मिल गया और कहो ना प्यार है ने कई अवॉर्ड अपने नाम किए हैं। वह इन दिनों अपनी ब्लॉकबस्टर फिल्म के सीक्वल कृष 4 की शूटिंग में बिजी हैं। एक अच्छे एक्टर ही नहीं बल्कि बेहतरीन फिल्म मेकर बन धमाका कर चुके राकेश रोशन आज किसी पहचान के मोहताज नहीं हैं। अपने एक्टिंग करियर में उन्होंने कई सुपरहिट फिल्मों में काम किया है जो दर्शकों को बहुत पसंद आई। एक्टिंग को अलविदा कहने के बाद उन्होंने निर्देशन में अपना दमखम दिखाया और उनकी कई बॉलीवुड फिल्मों ने बॉक्स ऑफिस पर तहलका मचा दिया। राकेश रोशन की फिल्मों के नाम ज्यादातर के से ही होते हैं। 1970 की फिल्म घर-घर की कहानी से एक्टिंग की दुनिया में कदम रखाने वाले राकेश अपने दौर के सुपरहिट हीरो में से एक रहे हैं। किंग अंकल, कोयला, कहो ना प्यार है, कोई मिल गया, करन-अर्जुन, कृष और कृष 2 जैसी बेहतरीन और सुपरहिट फिल्में डायरेक्ट कर चुके हैं।
राकेश रोशन ने फिल्म कोई मिल गया के लिए नेशनल अवॉर्ड जीता तो कहो ना प्यार है के लिए बेस्ट डायरेक्टर का फिल्मफेयर अवॉर्ड अपने नाम कर चुके हैं। इन दोनों ही फिल्म के लिए उन्होंने कई खिताब मिले हैं। बता दें कि राकेश रोशन ने साल 1987 में आई फिल्म खुदगर्ज से डायरेक्शनल डेब्यू किया था। ये फिल्म भी हिट रही। आज राकेश बॉलीवुड के मशहूर डायरेक्टर्स की लिस्ट में शामिल हो गए और उन्होंने अपने निर्देशन में कई एक्टर्स के साथ काम किया है।

50 रुपये लेकर मुंबई आया था राजेन्द्र कुमार

मनोरंजन जगत में स्टारडम तो कई लोग हासिल कर लेते हैं, लेकिन इसे संभालना किसी टेढ़ी खीर से कम नहीं है। बस एक चूक किसी भी अभिनेता के पतन का कारण बन सकती है। कई अभिनेता ऐसे रहे जो सुपरस्टार बन गए और बाद में गुमनामी के अंधेरे में खो गए। ऐसा ही एक अभिनेता जिसने लगातार 7 ब्लॉकबस्टर फिल्में दीं और जुबली स्टार बन गया, लेकिन अचानक ही हालात ऐसे बदले कि दिवालिया हो गया। हम जिस अभिनेता के बारे में बात कर रहे हैं, वह विभाजन के समय जेब में मात्र 50 रुपए लेकर भारत आए थे और दर्शकों के दिलों में अपनी जगह बनाई। हालांकि, उनका स्टारडम ज्यादा दिनों तक नहीं चला और जल्द ही उन्हें दिवालिया होने के बाद अपना बंगला मामुली दामों में बेचना पड़ा। ये एक्टर कोई और नहीं बल्कि राजेंद्र कुमार हैं।राजेंद्र कुमार को बॉलीवुड के सबसे सफल अभिनेताओं में से एक माना जाता है। साल 1949 में अपने करियर की शुरुआत करते हुए, उन्होंने चार दशकों से अधिक के करियर में 80 से अधिक फिल्मों में काम किया। 1960 के दशक में उन्हें जुबली कुमार के नाम से जाना जाता था। इसकी वजह उनकी बैक टू बैक कई ब्लॉकबस्टर फिल्में रहीं। राजेंद्र कुमार ब्रिटिश भारत के पंजाब प्रांत के सियालकोट में रहते थे। हालांकि विभाजन के दौरान उनके परिवार को अपनी सारी पुश्तैनी संपत्ति छोड़कर भारत आना पड़ा। जब राजेंद्र कुमार को अभिनय की दुनिया में कदम रखने का मौका मिला तो उनके पास केवल 50 रुपये थे, जो उन्होंने अपने पिता की घड़ी बेचकर खरीदे थे। उनके पास ट्रेन की टिकट खरीदने के लिए भी पैसे नहीं थे और वे किराए पर ट्रेंच लेकर गेस्ट हाउस में रहते थे। उन्होंने पतंगा और जोगन जैसी फिल्मों में छोटी भूमिकाओं के साथ अपने करियर की शुरुआत की। फिल्म वचन ने उन्हें पहचान दिलाई। इसके बाद महबूब खान की महाकाव्य ड्रामा फिल्म मदर इंडिया आई, जो बॉक्स ऑफिस पर भी बड़ी हिट रही। इसके बाद उन्होंने लगातार सात ब्लॉकबस्टर फिल्में दीं और 1960 के दशक तक वे सुपरस्टार बन गए। 1960 के बाद से लगातार हिट फिल्मों और कम से कम 25 सप्ताह (सिल्वर जुबली) तक चलने वाली उनकी कई फिल्मों के साथ राजेंद्र कुमार ने जुबली कुमार की उपाधि अर्जित की। उनकी कुछ ब्लॉकबस्टर फिल्मों में मुगल-ए-आज़म, आई मिलन की बेला, मेरे महबूब, आस का पंछी, घराना और कई फिल्में शामिल हैं। वैसे उनका स्टारडम ज्यादा दिनों तक नहीं रहा। मजदूर ज़िंदाबाद को खराब क्रिटिक्स रेटिंग तो मिली ही, इसके साथ ही फिल्म बॉक्स ऑफिस पर भी विफल रही। उन्होंने डाकू और महात्मा, शिरडी के साईं बाबा, सोने का दिल लोहे के हाथ, आहुति, साजन बिना सुहागन और बिन फेरे हम तेरे जैसी फिल्मों में अभिनय किया, जिनमें से सभी ने बॉक्स ऑफिस पर अच्छा प्रदर्शन किया।एक समय ऐसा भी था जब अभिनेता दिवालिया हो गए और उन्हें अपना बंगला राजेश खन्ना को बेचना पड़ा।

तुगलकी फरमान के विरूद्ध कलम बंद अभियान का 67 वां दिन

छत्तीसगढ़ सरकार बुलडोजर कार्यवाही झेलने के बावजूद...इंकलाब होता रहेगा इंसाफ तक...

क्या छापें कलेक्टर विलास भोसकर जी?

क्यूं न लिखें सच?

इमरजेंसी पर बात...हर बात पर आरोप...तो छत्तीसगढ़ में एक तुगलकी फरमान पर आदिवासी अंचल से विगत 20 वर्षों से प्रकाशित अखबार पर क्यों किया गया जुर्म...स्पष्टीकरण देना पड़ेगा?

क्यों कलमबंद आंदोलन के लिए विवश होना पड़ा एक दैनिक अखबार को...?

कलमबंद से घटती-घटना के स्नेही पाठकों,विज्ञापनदाताओं एवं शुभचिंतकों को हो रही असुविधा के लिए खेद है...

संपादक :- अविनाश कुमार सिंह

प्रकाशक,मुद्रक,स्वामी अविनाश कुमार सिंह के द्वारा सांई ऑफसेट प्रिंटर्स,नमनाकला,संत हरकेवल विद्यापीठ के पास,अम्बिकापुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-अविनाश कुमार सिंह* (पी.आर.बी.कानून के अनुसार संपूर्ण संपादकीय दायित्व के लिए जिम्मेदार)
RNI Reg.No.CHHHIN/2004/15050मो. 94062-23001,98265-32611,Email:ghatatighatana11@ gmail.com,Website:www.ghatatighatana.com, (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र अम्बिकापुर न्यायालय मान्य होगा)